सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-30 अंक-22 23 नवबर, 2015 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

महान नवम्बर क्रान्ति जिन्दाबाद

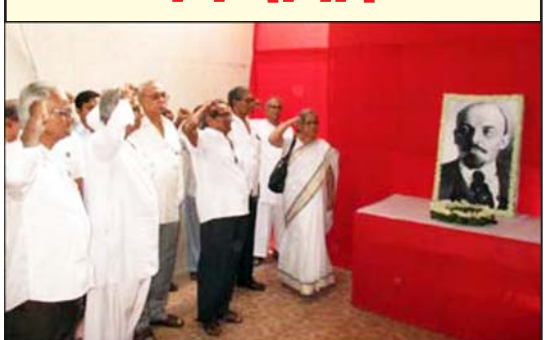

महान नवम्बर क्रान्ति की 98वीं वर्षगाँठ पर कोलकाता में 7 नवम्बर को एसयूसीआई(सी) के केन्द्रीय कार्यालय में झण्डा फहराने के बाद महान लेनिन की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए पार्टी के वरिष्ठ पोल्टि ब्यूरो सदस्य कॉ. रंजीत धर

बिहार की जनता को दी एसयूसीआई(सी) ने बधाई

बिहार विधान सभा के चुनावी नतीजों के बारे में एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 9 नवम्बर को जारी एक बयान में कहा कि बिहार विधान सभा के चुनावी नतीजे बीजेपी की जघन्य, साम्प्रदायिक और घोर जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जनादेश है। मोदी के शासन में विकास के झूठे नारों के अलावा, संघ परिवार ने आक्रामक साम्प्रदायिक प्रचार अभियान का सहारा लिया, लेकिन बिहार की जनता ने इस गंदे खेल को समझ लिया और चुनाव में निर्णायक रूप से बीजेपी को ठुकरा दिया। इसके लिए हम बिहार की जनता को बधाई देते हैं। बीजेपी की हार केवल बिहार की जनता ही नहीं बल्कि समस्त भारत की धर्मनिरपेक्ष और जनवाद-पसंद जनता चाहती थी।

फिर भी, यह गौरतलब है कि महागठबंधन के घटक दल अतीत में राज्यों या केन्द्र में समय-समय पर शासक दल रहे हैं और उनका पिछला रिकार्ड दर्शाता है कि वे न तो धर्मनिरपेक्ष हैं और न ही जनवादी व जनपक्षधर। क्योंकि कोई ताकतवर संयुक्त वाम-जनवादी विकल्प नहीं था, इसलिए लोगों को चुनाव में महागठबंधन को वोट देना पड़ा। हम उम्मीद करते हैं कि भले ही महागठबंधन प्रगतिशील ताकत नहीं है, फिर भी मौजूदा हालात में इसकी जीत हिन्दू कट्टरपंथियों की बढ़ती दबंगई पर कुछ हद तक रोक लगायेगी। लेकिन केवल जोरदार संयुक्त वाम-जनवादी आन्दोलन ही देश में फासीवाद के बढ़ते खतरे को निर्मूल कर सकता है।

छह वाम दलों ने लिया संयुक्त आन्दोलन का फैसला

दिल्ली : एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष द्वारा 6 वाम दलों को 15 अक्तूबर को लिखी चिट्ठी के प्रत्युत्तर में 10 नवम्बर को यहां अजय भवन में एक संयुक्त बैठक हुई। इसमें सीपीआई(एम), सीपीआई, आरएसपी, फारवर्ड ब्लाक व सीपीआई(एमएल)-लिबरेशन के नेताओं के अलावा एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती और एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड प्राण शर्मा ने भी भाग लिया। कॉमरेड चक्रवर्ती द्वारा बैठक में रखे गये सुझावों का सभी वाम दलों ने समर्थन किया और एक संयुक्त बयान जारी किया।

बयान में कहा गया कि आरएसएस द्वारा चलाये जा रहे और बीजेपी द्वारा समर्थन दिये जा रहे साम्प्रदायिक नफरत फैलाने के हमलों के खिलाफ वाम दलों की ओर से 1 से 6 दिसम्बर के बीच प्रतिवाद के विभिन्न तरह के कार्यक्रमो के जरिये देशव्यापी अभियान चलाया जायेगा।

बीजेपी की करारी हार के लिए वाम दलों ने बिहार की जनता को बधाई दी और अभिनन्दन किया। बिहार विधान सभा चुनाव में संयुक्त वाम ब्लाक के प्रचार अभियान को बिहार की जनता ने अच्छा माना और 3 सीटों पर जीत हासिल की।

वाम दलों ने साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, फिल्म जगत की हस्तियों और बुद्धिजीवियों को सलाम किया जो आरएसएस/बीजेपी द्वारा छेड़ी गई बढ़ती साम्प्रदायिक घृणा और साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के खिलाफ बहादुरी से उठ खड़े हुए हैं। उनको गाली-गलौज करने के चलाये जा रहे अभियान की वाम दलों ने कड़ी भर्त्सना की।

बढ़ती असहिष्णुता, अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार पर हमले व सरकार की चुप्पी के खिलाफ प्रदर्शन

जमशेदपुर (झारखण्ड) : बढ़ती असहिष्णुता, अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार पर हमले और सरकार की चुप्पी के खिलाफ सैकड़ों जाने-माने साहित्यकारों, उपन्यासकारों, स्तम्भ लेखकों, गायकों, वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, फिल्म निर्देशकों, रंगकर्मियों, लेखकों और बुद्धिजीवियों ने 9 नवम्बर को जमशेदपुर की सड़कों पर उतर कर रोष प्रदर्शन किया। उन्होंने नगर के हृदयस्थल साकची गोल चक्कर पर घण्टों कब्जा किये रखा और नुक्कड़ नाटक, क्रान्तिकारी गाने और भाषण जारी रखे। इससे पहले शहर में विशाल जुलूस निकाला गया।

महान नवम्बर क्रान्ति की 98वीं वर्षगांठ पर

हरियाणा में जगह-जगह हुई जनसभाएं

भिवानी (हरियाणा) : महान नवम्बर क्रान्ति की 98वीं वर्षगाँठ पर 17 नवम्बर को यहां स्थानीय नेहरू पार्क में एसयूसीआई(सी) ने सभा का आयोजन किया। सभा की अध्यक्षता पार्टी के भिवानी स्थानीय कमेटी सचिव कॉमरेड राजकुमार ने की। सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के हरियाणा राज्य सचिव कॉमरेड सत्यवान थे।

कॉ. सत्यवान ने कहा कि यह मानव इतिहास में मजदूर वर्ग की पहली सफल क्रान्ति थी। इससे पहले मानव समाज में जितनी भी क्रांतियाँ हुई थी उनसे शोषक बदले, पर शोषण समाप्त नहीं हुआ था। लेकिन इस मजदूर क्रान्ति के बाद वहां समाजवाद कायम हुआ था और मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्त एक वर्गविहीन समाज बनाने का रास्ता खुला था। एक नई सभ्यता का जन्म हुआ था जिसने पूरी दुनिया के शोषित-पीड़ितों को प्रेरित किया था। इससे प्रेरणा पाकर चीन, वियतनाम, क्यूबा, पूर्वी यूरोप के देशों में क्रान्तियां हुई थी। रूस की लाल फौज ने फासिस्ट हिटलर को हराया था। उपनिवेशों में आजादी आन्दोलन तेज हुए थे।

उन्होंने आगे बताया कि पूँजीवाद और साम्यवाद के

महान नवम्बर क्रान्ति की वर्षगाँठ पर नेहरू पार्क, भिवानी में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान(इनसेट में)

महान नवम्बर क्रान्ति ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

बीच समाजवाद एक संक्रमणकालीन चरण है। इसमें वर्ग और वर्ग संघर्ष, दोनों ही मौजूद रहते हैं। मार्क्सवाद से भटकाव के कारण रूस-चीन में संशोधनवाद आया। अन्दर से संशोधनवादियों और बाहर से साम्राज्यवादियों की साजिश से हुई प्रतिक्रान्ति से रूस, चीन आदि में आज पूँजीवाद की पुनर्स्थापना हो चुकी है। समाजवाद का यह अस्थायी उलटफेर भावी मजदूर क्रान्ति के लिए अत्यंत मूल्यवान सबक छोड़ गया है। समाज विकास के इतिहास द्वारा निर्धारित नियम से अंतत: समाजवाद की जीत होना निश्चित है। लेकिन यह अपने आप नहीं होगी। इसके लिए सही रास्ता, क्रान्तिकारी पार्टी और क्रान्तिकारी विचारधारा होनी चाहिए। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के हर क्षेत्र में संकट के काले बादल छाये हुए हैं। महामंदी से रूबरू विश्व साम्राज्यवाद-पूँजीवाद हांफ रहा है। हमारे देश में भी जनजीवन की तमाम समस्याओं की जड़ मौजूदा शोषणमूलक पूंजीवादी व्यवस्था गहरे बाजार संकट में फंस चुकी है। देश में पूंजीवादी शासन-शोषण बरकरार रखने के लिए ही भाजपा व संघ परिवार सहित साम्प्रदायिक ताकतें साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रीयतावाद, असहिष्णुता आदि तमाम तरह की फूटपरस्त भावनाओं को भड़का रही हैं। फासीवाद का खतरा मंडरा रहा है। उन्होंने जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं पर वामदलों की ओर से जोरदार संयुक्त आन्दोलन गठित किये जाने पर बल दिया।

कॉ. धर्मवीर सिंह ने कहा कि शासक पूंजीपति वर्ग की ताबेदार केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकार पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की ही तर्ज पर जनविरोधी नीतियां लागू कर रही है। इन से बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, महिलाओं पर अत्याचार, श्रम अधिकारों के हनन, शिक्षा-स्वास्थ्य, बिजली-पानी, परिवहन आदि सेवाओं के निजीकरण और बेतहाशा रेट बढ़ोतरी आदि समस्याओं से लोग दुखी हैं। निर्मम पूँजीवादी शोषण ने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है। लोग हाहाकार कर रहे हैं। देश शोषण से मुक्ति की यंत्रणा से छटपटा रहा है। लोग शोषण से मुक्ति चाहते हैं। ऐसे में लोगों के पास आन्दोलन ही बचने का एकमात्र रास्ता है। इसके लिए उन्होंने देश में मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा से लैस सर्वहारा की क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई(सी) को मजबूत करने का आह्वान किया।

सभा को पार्टी की जिला कमेटी सदस्य जिले सिंह ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर महान लेनिन की फोटो पर पुष्पांजलि भी अर्पित की गई। मंच का संचालन कॉ. संदीप मेहरा ने किया। कॉ. उम्मेद सिंह व संदीप मेहरा ने क्रान्तिकारी गाने गाये। सभा में सैकड़ों लोगों ने शिरकत की।

हरियाणा के कई अन्य जिलों में भी महान नवम्बर क्रान्ति की वर्षगांठ पर सभाएं की गई। कैथल में 12 नवम्बर को स्थानीय राधाकृष्ण धर्मशाला में हुई सभा की अध्यक्षता पार्टी के कैथल-कुरूक्षेत्र जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड रोशन लाल ने की। मुख्य वक्ता राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल थे। सभा को जिला कमेटी सदस्य कॉ बाबूराम व कॉ. राजकुमार ने भी सम्बोधित किया।

रेवाड़ी में 15 नवम्बर को पार्टी के नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन हुआ और महान नवम्बर क्रान्ति की सीखों को याद किया गया। पार्टी के राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने मुख्य वक्तव्य रखा। सभा की अध्यक्षता जिला सचिव कॉ. राजेन्द्र सिंह ने की। इस अवसर पर राज्य कमेटी सदस्यगण कॉ. विजय कुमार, ईश्वर सिंह राठी व कॉ. रामफल भी मंच पर उपस्थित थे। रोहतक में छोटूराम पार्क में जिला सचिव कॉ. अनूप सिंह की अध्यक्षता में 8 नवम्बर को सभा हुई। सभा को मुख्य वक्ता राज्य सचिव कॉ. सत्यवान और जिला कमेटी सदस्य कॉ. जयकरण ने सम्बोधित किया। सोनीपत में 14 नवम्बर को हुई सभा की अध्यक्षता जिला सचिव कॉ. ईश्वर सिंह राठी ने की, मुख्य वक्ता कॉ. सत्यवान के अलावा जिला कमेटी सदस्य कॉ. हरिप्रकाश ने भी बात रखी। नारनौल, हिसार व गुड़गाव में हुई सभाओं को राज्य सचिव कॉ. सत्यवान ने सम्बोधित किया।

ज्वलन्त मांगों पर किसानों ने सौंपा ज्ञापन

तोशाम : किसानों की ज्वलंत मांगों पर एसडीएम (नागरिक) को ज्ञापन सौंपते हुए ऑल इण्डिया केकेएमएस के नेता-कार्यकर्ता

तोशाम (हरियाणा) : सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन की ओर से 18 नवम्बर को यहां एसडीएम, तोशाम कार्यालय पर प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार के नाम मांगों का ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में मांग की गई कि किसानों को सभी फसलों के लाभकारी दाम दिये जाएं। न्यूनतम समर्थन मूल्य लागत खर्च से 50 प्रतिशत ज्यादा हो। फसल को सरकार खुद खरीदे। फसलों का बीमा हो। सूखे से बाजरा, ग्वार और कीड़ा लगने से कपास की फसलों को हुए नुकसान का प्रति एकड़ 30,000 रुपये मुआवजा तुरंत दिया जाए। कृषि सब्सिडी बढ़ा कर खाद, बीज, कीटनाशक व कृषि औजार सस्ते किये जाएं, डीजल के दाम आधे किये जायें। पेयजल, सिचाई के लिए पानी व बिजली सप्लाई पूरी दी जाए। बिजली के बढ़ाये गये रेट व फ्यूल चार्ज वापस लिये जाएं। कृषि लायक भूमि के अधिग्रहण पर पूर्ण रोक लगाई जाए। गरीब किसानों के कर्जे खत्म किये जायें। कर्जवान किसानों की जमीन की कुर्की न की जाए। 50,000 रुपये तक बिना ब्याज कर्ज दिया जाए। महंगाई पर रोक लगाई जाये। सभी गरीबों को सस्ता राशन दिया जाये। गांवों में सस्ते दरों की सरकारी दुकान खोली जायें। सब को रोजगार दिया जाए। खेत-मजदूरों का रजिस्ट्रेशन किया जाये, उनको सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाए। मनरेगा मजदूरों को कम से कम 200 दिन काम और 300 रु. मजदूरी दी जाए। सबको निशुल्क शिक्षा व इलाज का अधिकार दिया जाए। सभी जरूरतमंदों को मुफ्त आवासीय प्लाट दिए जायें। सभी गरीबों को सस्ता राशन दिया जाए। सभी वृद्ध किसान-खेतमजदूरों व दस्तकारों और विधवाओं व विकलांगों को 3000 रुपये प्रति महीना पैंशन दी जाये। फसल खराब होने के सदमे से या आत्महत्या करके मरने वाले किसानों के हर परिवार को 25 लाख रुपये मुआवजा दिया जाए। आवारा पशुओं पर नियंत्रण किया जाए।

प्रदर्शन से पहले किसान-मजदूर पंचायत घर के पास एकत्रित हुए। किसान संगठन के राज्य सचिव कॉ. विजय कुमार, जिला प्रधान कॉ. जिले सिंह और जिला सचिव कॉ. रोहताश सिंह सैनी के नेतृत्व में जोश के साथ नारे लगाते हुए वहां से जुलूस निकाला गया जो तहसील के सामने पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया।

कॉ. विजय कुमार ने कहा कि गांव की गरीब जनता बेहाल है। वे समस्याओं से बड़े भारी परेशान हैं। किसानों को फसल के लाभकारी मूल्य नहीं दिये जाते। खेती में लागत ज्यादा और आमदनी कम होने से किसान कर्ज के जाल में फंसते जा रहे हैं। सूखे, अति वर्षा या बिमारी से फसलें बर्बाद होने पर मुआवजा तक दिया नहीं गया है। तंग आकर किसान आत्महत्या कर चुके हैं। बैंक जमीन की कुर्की करने पर उतारू हैं। प्रशासन व सरकार किसान-मजदूरों की बजाय मुनाफाखोरों, जमाखोरों, सूदखोरों, बैंकों, कारखानेदारों और जमीन हड़पने वाली प्राइवेट कम्पनियों के साथ खड़ी है। भाजपा सरकार ने बिजली व तेल के रेट बढ़ा कर लोगों पर भारी आर्थिक बोझ डाल दिया है। 2 एकड़ तक जमीन वाले किसानों को ट्यूबवैल कनैक्शन देने पर रोक लगा दी है। बिजली सिक्योरिटी राशि एक लाख रुपये कर दी है। सिंचाई का पूरा प्रबंध नहीं है, न बिजली पूरी आती है न पानी। किसानों को मिलने वाली सब्सिडी में हजारों करोड़ रुपये की कटौती कर दी है। मजदूरों को साल भर काम नहीं मिलता है। मनरेगा में मजदूरी के सरकारी रेट चालू रेट से बहुत कम हैं। खेतमजदूरों को सामाजिक सुरक्षा की गारंटी नहीं है। उन्होंने सरकार के इन जनविरोधी कदमों का डट कर विरोध करने का आह्वान किया।

कॉ. जिले सिंह ने कहा कि विकास के नाम पर सरकार पूंजीपतियों की तिजोरियां भर रही है और उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण की उन्हीं जनविरोधी नीतियों को लागू कर रही है जो पिछली सरकार ने शुरू की थी। ऐसे में लोगों के पास आन्दोलन ही बचने का एकमात्र रास्ता है।

प्रदर्शन में कॉ. सुखबीर सिंह, राजकुमार, उम्मेद नम्बरदार, फूल सिंह, उदयवीर, मनोहर लाल, मनीराम, आदि भी शामिल थे।

रेवाड़ी में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

ढांड

सोनीपत

रोहतक

ऑल इंडिया डी एस ओ का प्रथम म.प्र. राज्य सम्मेलन सम्पन्न

ग्वालियर में एआईडीएसओ के राज्य सम्मेलन के खुले अधिवेशन का एक दृश्य

ग्वालियर(म.प्र.) : शिक्षा और मानवता पर हो रहे घातक हमलों के खिलाफ ऑल इंडिया डीएसओ के आह्वान पर प्रथम राज्य छात्र सम्मेलन यहां शानदार सफल हुआ। 3 नवंबर को एमएलवी कॉलेज ग्वालियर से छात्रों की विशाल रैली की शुरूआत हुई। इसमें म.प्र. के 16 से अधिक जिलों से आये छात्रों ने हिस्सा लिया। रैली की शुरूआत चेतराम सिंह भदौरिया, रिटायर्ड एसपी द्वारा झंडा दिखाकर की गई। स्वागत समिति के सदस्य सुधीर सप्रा द्वारा इस दौरान 50 के दशक के छात्र आंदोलन में शहीद हुए हरिसिंह और दर्शन सिंह की मूर्ति पर कॉलेज प्रांगण में माल्यार्पण किया गया। जोश-खरोश के साथ और झंडे, बैनर व प्लेकार्ड से सुसज्जित छात्र रैली खुला अधिवेशन स्थल शहीद बिस्मिल मंच, महाराज बाड़ा की ओर रवाना हुई। फीसवृद्धि, शिक्षा के निजीकरण व्यापारीकरण के खिलाफ, सेमेस्टर, सीबीसीएस, रुसा के खिलाफ व कक्षा 8वीं तक पास-फेल प्रणाली पुन: लागू करने एवं महिलाओं व छात्राओं पर अत्याचार रोकने की माँग के नारे लगाते हुये अनुशासित छात्र रैली जब शहर के मुख्य मार्गों से गुजरी तो उसने आम नागरिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। छात्रों का उत्साह देखने लायक था।

खुले अधिवेशन की शुरूआत रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा रचित गीत 'सरफरोशी की तमन्ना' से हुई। डीएसओ के अखिल भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कमल सांई द्वारा शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के चित्र पर पुष्प अर्पित किये गये।

खुले अधिवेशन के मुख्य वक्ता कॉमरेड प्रताप सामल, एसयूसीआई (सी) म.प्र. राज्य सचिव ने कहा कि आज का यह सम्मेलन एक ऐसे समय में हो रहा है जब तमाम सरकारें शिक्षा को बर्बाद कर छात्रों के भविष्य को अंधकार में डाल रहीं हैं। सेमेस्टर सिस्टम और 8वी तक सबको पास करने की नीति ने शिक्षा को गहरी चोट पहुँचाई है। म.प्र. सरकार द्वारा रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम से हटा दिया गया। महान आदर्शों, महान क्रान्तिकारियों की कुर्बानियों को भुलाकर छात्रों की नैतिक रीढ़ को तोड़ा जा रहा है तथा उन्हें अश्लीलता के दलदल में डुबाया जा रहा है। ऐसे समय में एक जोरदार छात्र आंदोलन को विकसित करना समय की माँग है। स्वागत समिति के अध्यक्ष, पूर्व कुलपति व खुले अधिवेशन के मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश सिंह बिसेन ने कहा कि शिक्षा को महान मनीषियों व शिक्षाविदों ने उच्च स्तर तक पहुँचाया था। एक समय गुरू-शिष्य परंपरा का अटूट संबंध था, सामाजिक ढाँचा मजबूत था। आज राजनीतिज्ञ, अधिकारी व पूँजीपति लोग शिक्षा के व्यवसायीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं व शिक्षा के सारतत्व को खत्म कर रहे हैं।

खुले अधिवेशन के बाद हुये सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे नाटक, समूह नृत्य, समूह गान आदि ने मौजूद छात्रों, शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, साहित्यकारों, दुकानदारों व आम नागरिकों पर गहरा असर छोड़ा। खुले अधिवेशन में एक हजार से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया।

प्रतिनिधि अधिवेशन 4 नवंबर को चंद्रशेखर आजाद मंच, नाट्य कला मंदिर ग्वालियर में हुआ। शुरूआत में अखिल भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कमल सांई द्वारा ध्वजारोहण किया गया। सभी नेतागण द्वारा शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता सर्वकॉमरेड सुनील गोपाल, लोकेश शर्मा, रूपेश जैन व प्रीति पटवर्धन के अध्यक्षमंडल द्वारा की गई। मुख्य प्रस्ताव कॉमरेड सचिन जैन द्वारा पेश किया गया जिसका समर्थन कॉमरेड मुदित भटनागर द्वारा किया गया। आधा सैंकड़ा से अधिक प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव पर बात रखी और शैक्षणिक समस्याओं पर खुल कर चर्चा की। सम्मेलन में व्यापमं घोटाले पर प्रस्ताव कॉमरेड अजीत पवार, महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ रहे हमलों के खिलाफ प्रस्ताव कॉमरेड नित्या पवार, देश-प्रदेश में बढ़ती असहिष्णुता के खिलाफ प्रस्ताव कॉमरेड बबीता समर द्वारा रखा गया। सांगठनिक रिपोर्ट कॉमरेड सचिन जैन द्वारा प्रस्तुत की गई, जिसका समर्थन कॉमरेड विनोद लोगारिया द्वारा किया गया।

प्रतिनिधि अधिवेशन को संबोधित करते हुये डीएसओ के अखिल भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कमल सांई ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था को पूँजीपतियों की जरूरत के अनुसार ढाला जा रहा है। शिक्षा के निजीकरण, व्यापारीकरण के चलते आम गरीब व मध्यम वर्गीय परिवारों के छात्र शिक्षा से वंचित हो रहे हैं।

संगठन के अखिल भारतीय महासचिव कॉमरेड अशोक मिश्रा ने कहा कि मप्र सरकार प्रदेश के 1 लाख 21 हजार सरकारी स्कूलों को ठेके पर देने जा रही है। छात्र संघ चुनाव को बंद करके सरकार छात्रों को उनकी समस्याएँ उठाने से वंचित कर रही है। प्रदेश में लाखों शिक्षकों व प्राध्यापकों की कमी है, अध्यापकों को समान कार्य का समान वेतन नहीं दिया जा रहा है। इन सभी के खिलाफ डीएसओ लगातार संघर्ष चला रहा है। उन्होने कहा कि आज गहरे अंधकार और निराशा के दौर में डीएसओ द्वारा चलाया जा रहा छात्र आंदोलन हताश व निराश छात्रों को संघर्ष करने का होंसला दे रहा है। शहीद खुदीराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाकउल्ला खान, चंदशेखर आजाद जैसे महान आदर्शों से प्रेरणा लेकर छात्र आंदोलन को प्रदेश के कोने कोने तक ले जाने की उन्होंने छात्रों से अपील की।

अधिवेशन को अखिल भारतीय उपाध्यक्षगण कॉ. वीएनआर शेखर, कॉ. गोपाल साहू व कॉ. भास्करानंद ने एवं एसयूसीआई (सी) ग्वालियर जिला सचिव कॉमरेड सुनील गोपाल ने भी संबोधित किया। सम्मेलन में सभी अतिथियों व डीएसओ के पूर्व छात्र नेताओं को स्मृति चिन्ह भेंट किये गये।

सम्मेलन में प्रथम राज्य कमेटी चुनी गयी जिसमें अध्यक्ष कॉ. मुदित भटनागर व सचिव कॉ सचिन जैन चुने गये। कॉ योगेश धाकड़ उपाध्यक्ष व कॉ विनोद लोगारिया कोषाध्यक्ष व कार्यालय सचिव चुने गये। साथ ही 7 सदस्यीय सचिव मंडल 22 सदस्यीय राज्य कमिटी व 59 सदस्यीय राज्य परिषद् चुनी गयी। सम्मेलन की कार्यवाही, वक्ताओं के वक्तव्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम व माहौल ने सभी प्रतिनिधियों को उत्साह से भर दिया व सभी अपने-अपने जिले व पूरे प्रदेश में छात्र आंदोलन को चलाने का संकल्प लेकर गये।

प्रतिनिधि अधिवेशन के मंच पर बैठे छात्र नेता और कार्रवाही में भाग ले रहे छात्र प्रतिनिधिगण

सिर्फ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन की महान वैज्ञानिक विचारधारा ही दिखा सकती है मुक्ति का रास्ता

– कॉमरेड प्रभाष घोष

(गतांक से आगे)

क्या हमारी समस्याओं का समाधान कर सकता है गांधीवाद?

अब गांधीजी के चिंतन का विचार-विश्लेषण करके देखें। गांधीजी ने अपने सोच-विचार के स्रोत के बारे में खुद ही कहा है, ''मैं जो कुछ कहता हूँ, वह ईश्वर की वाणी है। मेरा दावा कि मैं ईश्वर की आवाज को सुन सकता हूँ, कोई नया दावा नहीं है। ... जिस समय मैंने वह आवाज सुनी, मैं स्वप्न नहीं देख रहा था। उस आवाज को सुनने से पहले मेरे अन्दर घोर संघर्ष छिड़ा था। अचानक मुझे वह आवाज सुनाई दी। मैंने उसे सुना, जब निश्चित हो गया कि यह आवाज उसी की है तो अन्दर का संघर्ष समाप्त हो गया। ... यह आधी रात में 11-12 बजे के बीच घटित हुआ। मैं शांत हो गया। और इसके बारे में नोट लिखना शुरू करता हूँ जो पाठकों ने देखे होंगे। ... संदेहालुओं को आश्वस्त करने के लिए मेरे पास कोई और प्रमाण नहीं है। ... लेकिन मैं एक बात कहना चाहूँगा कि अगर सारी दुनिया भी एक स्वर में इसे झूठ कहे तो भी मेरा यह विश्वास अडिग रहेगा कि जो आवाज मैंने सुनी थी, वह ईश्वरीय वाणी ही थी।''

देखिये बीसवीं सदी में अंधविश्वास के वशवर्ती होकर उन्होंने क्या कहा है? क्योंकि वे भी विश्वास किया करते थे कि मन को सुपर-मन चलाता है, सच्चे मन से आराधना करने से दैव-वाणी सुनी जा सकती है। अहिंसा को दैव-वाणी की मान्यता देकर ही उन्होंने कहा था, ''भले ही मुझे गारण्टी दी जाये कि सशस्त्र संघर्ष के रास्ते ही स्वाधीनता आयेगी, तो भी मैं उसे ठुकरा दूंगा। क्योंकि वह यथार्थ स्वाधीनता नहीं होगी।'' इसीलिए उन्होंने सुभाष चन्द्र बोस-भगतसिंह की सशस्त्र क्रान्ति को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भी ज्यादा खतरनाक माना था और इसका घोर विरोध किया था। उन्होंने विचार-विश्लेषण की वैज्ञानिक पद्धति को ही नहीं अपनाया। इसलिए उन्होंने इस बात को भी मानने से उन्होंने इनकार कर दिया था कि वर्ग-विभाजित समाज में जिस किसी भी व्यक्ति का चिंतन किसी न किसी वर्ग का चिन्तन होना लाजिमी है। ईमानदारी, सच्चे मन के बावजूद वे यह समझ ही नहीं सके कि आजादी आन्दोलन में वर्ग-विभाजित भारतवर्ष के बुर्जुआ वर्ग में समाये मजदूर क्रान्ति के डर से ही उनके मन में उनके अनजाने में धर्मान्धता और सशस्त्र क्रान्ति का विरोध पैदा हुआ था–जैसाकि कॉमरेड शिवदास घोष ने बाद में दिखाया था। यह मानते हुए कि उनके प्रवचन दैव-वाणी को ही प्रतिबिम्बित करते हैं, गांधीजी ने कहा था, ''भगवान ने ही मालिक पूँजीपतियों और मजदूरों को पैदा किया है। मालिकों के पास है बुद्धि की शक्ति, और मजदूरों के पास है हाथों की श्रमशक्ति। ... ''हम पूँजीपति से आग्रह करते हैं कि वह स्वयं को उन लोगों का न्यासी(ट्रस्टी) समझे जिनके ऊपर वह अपनी पूँजी के निर्माण, उसकी रक्षा और उसके संवर्धन के लिए निर्भर है। ... करोड़ों की सम्पत्ति जरूर कमाइये, पर यह समझ लीजिए कि यह आपकी नहीं है, जनता की है। अपनी कमाई में से अपनी जायज जरूरतों के लिए अपने पास रख कर शेष को समाज के हित में खर्च कर दीजिए। ...कोई व्यक्ति संबंधित लोगों की स्वेच्छा अथवा बलात् सहयोग(व्यक्तिगत मालिकाने) के बिना विपुल धनराशि का संचय नहीं कर सकता। उसे महज यह सुनिश्चित करना है कि इस धन-दौलत का दुरुपयोग न हो, इसका जायज और सही तरीके से इस्तेमाल हो सके। मैं मन में पूँजीपतियों के प्रति बैरभाव नहीं रखता, ... मैं उन्हें कोई नुकसान पहुंचाने की नहीं सोच सकता, लेकिन कष्ट-भोग कर मैं उनके कर्तव्य की भावना उनमें जगाना चाहता हूँ, मैं उनका हृदय परिवर्तन करना चाहता हूँ, ताकि वे उनसे कम भाग्यवान श्रमिक भाइयों के लिए कुछ न्यायसंगत काम करें। ... मैं जमींदारों और दूसरे पूँजीपतियों को अहिंसा के द्वारा हृदय परिवर्तन करना चाहता हूँ और इसीलिए वर्ग-युद्ध की अनिवार्यता मैं स्वीकार नहीं करता। ... मेरा समाजवाद अथवा साम्यवाद अहिंसा पर तथा श्रम और पूँजी एवं जमींदार और काश्तकार के बीच सामंजस्यपूर्ण सहयोग पर आधारित होना चाहिए।'' जीवन भर गांधीजी ने इसको ईश्वरीय-वाणी के तौर पर माना और उसी के मुताबिक काम किया। इसलिए देशवासियों के कल्याण के नाम पर उन्होंने अनजाने में ही पूँजीपतियों के वर्ग स्वार्थ की ही रक्षा की। आप खुद विचार करके देखें, गांधीजी द्वारा आकांक्षित अहिंसा के रास्ते पूँजीपतियों का 'हृदय' कितना परिवर्तित हुआ, 'धन-दौलत' का कितना हिस्सा युक्तिसंगत और न्यायसंगत जरूरत के मुताबिक उन्होंने इस्तेमाल किया, कितना कुछ 'बाकी हिस्सा' 'कम भाग्यवान भाइयों' के लिए 'न्यायसंगत काम में इस्तेमाल किया'। अब विचार करके देखें, गांधीवाद से देश के संकट का समाधान हो सकता है क्या? देश का बंटवारा गांधीजी के लिए एक करारा प्रहार बन गया था और गांधीजी ने अपने जीवन के आखरी सालों में गहरी टीस के साथ टिप्पणी की थी कि ''मेरा संघर्ष और मिशन नाकाम हो गया है।''

क्या हमारी राह रोशन कर सकते हैं रवीन्द्रनाथ के विचार?

भाववादी दृष्टिकोण से और शाश्वत सत्य की धारणा से मुक्त न हो पाने से एक और महापुरुष रवीन्द्रनाथ भी गांधीजी की तुलना में रक्षणशीलता से मुक्त, उदार और मुक्तमना होते हुए भी समस्या के समाधान का रास्ता नहीं दिखा पाये। एक महान मानवतावादी रवीन्द्रनाथ शोषित लोगों के लिए कितनी तीव्र व्यथा-वेदना अनुभव करते हुए लिख रहे हैं, ''चिरकाल से ही मनुष्य की सभ्यता में अप्रसिद्ध लोगों का एक ऐसा दल होता है जिनकी संख्या तो अधिक होती है, फिर भी वे ही वाहन होते हैं, उन्हें मनुष्य बनने का समय ही नहीं है। वे देश की सम्पदा की झूठन पर पलते हैं। वे सबसे कम खाकर, सबसे कम पहन कर, कम सीख कर, अन्य सभी की टहल बजाते हैं। ... बात-बात पर वे भूखों मरते हैं, वे रोगों से मरते हैं, ऊपर वालों की लाठी-डण्डे व लात खाते हैं ... वे सब कुछ से ही वंचित हैं। वे सभ्यता की दीवट हैं, सिर पर दीया लिये खड़े रहते हैं–ऊपर वाले सबको रोशनी मिलती है, और उन बेचारों के शरीर से तेल ढलकता रहता है।'' दूसरे रवीन्द्रनाथ लिख रहे हैं, ''मैंने बहुत दिनों से इनके बारे में बहुत सोचा है। लगता है, इसका कोई उपाय नहीं है। किसी के नीचे रहे बिना कोई ऊपर रह ही नहीं सकता। जबकि ऊपर रहने की जरूरत है। ऊपर रहे बिना नितांत नजदीक की सीमा से परे कुछ देखा नहीं जा सकता, मनुष्य का मनुष्यतत्व केवल जीविका निर्वाह करने के लिए ही तो नहीं है। एकांत जीविका को अतिक्रमित कर आगे बढ़े, तभी तो उसकी सभ्यता है। सभ्यता की श्रेष्ठ फसल फुर्सत के खेत में ही फलती-फूलती है। ... इसीलिए मैं सोचा करता था कि मनुष्य सिर्फ अवस्था की गति के कारण ही नहीं, बल्कि शरीर व मन की गति के कारण भी नीचे के तले का काम करने को बाध्य हैं और उसी काम के लायक हैं, यथासम्भव उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सुख-सुविधा के लिए कोशिश करनी चाहिए।'' गांधीजी ने जैसे कहा है, ''भगवान ने मालिकों को भी पैदा किया है, मजदूरों को भी उसी ने पैदा किया है। मालिकों के पास है बुद्धि की शक्ति, और मजदूरों के पास है हाथों की श्रमशक्ति।'' हूबहू इसी तरह रवीन्द्रनाथ कह रहे हैं, ''किसी के नीचे रहे बिना कोई ऊपर रह ही नहीं सकता। जबकि ऊपर रहने की जरूरत है। ऊपर रहे बिना नितांत पास की सीमा से परे कुछ देखा नहीं जा सकता, मनुष्य का मनुष्यतत्व केवल जीविका निर्वाह करने के लिए ही तो नहीं है। एकांत जीविका को अतिक्रमित कर आगे बढ़े, तभी तो उसकी सभ्यता है। सभ्यता की श्रेष्ठ फसल फुर्सत के खेत में ही फलती-फूलती है। ... जो सिर्फ अवस्था की गति के कारण ही नहीं, बल्कि शरीर व मन

की गति के कारण नीचे के तले का काम करने को बाध्य है और उसी काम के लायक है..।'' अर्थात् दोनों ही एकमत हैं कि समाज में बुद्धि की शक्ति और श्रमशक्ति का पार्थक्य शाश्वत है। बुद्धि की शक्ति हुए बिना 'सम्पदा' और 'सभ्यता' की श्रेष्ठ फसल नहीं फलेगी। और श्रमशक्ति 'शरीर और मन की गति के कारण नीचे के तले का काम करने को बाध्य है और उसी काम के लायक है।' उनके न रहने से 'सभ्यता की श्रेष्ठ फसल' नहीं फलेगी। जिस रूस में महान लेनिन और स्टालिन के नेतृत्व में पूँजीवादी व्यक्तिगत मालिकाने का खात्मा करके मजदूर वर्ग का सामाजिक मालिकाना कायम कर दिया गया था, उस समाजवादी सोवियत यूनियन को 1930 में देखकर एक उदार, जनतांत्रिक मानवतावादी रवीन्द्रनाथ ने मुग्ध होकर लिखा था, ''... संसार में जहां सबसे बड़े ऐतिहासिक यज्ञ का अनुष्ठान हो रहा हो, वहां निमंत्रण पाकर भी न जाना मेरे लिए अक्षम्य होता। ... फिलहाल रूस आया हूँ –न आता तो इस जन्म की तीर्थयात्रा अधूरी ही रह जाती।'' 1939 में कवि ने अमिय चक्रवर्ती को ऐसा भी लिखा था, ''... मानव के नवयुग का रूप इस तपोभूमि में देखकर मैं आनन्दित और आशान्वित हुआ हूँ। मनुष्य के इतिहास में और कहीं भी आनन्द और आशा का स्थायी कारण नहीं देखता हूँ। जानता हूँ कि एक प्रकाण्ड क्रान्ति के ऊपर रूस ने इस नवयुग को प्रतिष्ठित किया है। लेकिन यह क्रान्ति मनुष्य के सबसे निष्ठुर और प्रबल दुश्मन के खिलाफ क्रान्ति है –यह क्रान्ति बहुत दिनों के पापों का प्रायश्चित का विधान है। ... नवजात रूस मानवसभ्यता के अस्थिपिंजर से एक बहुत बड़ा मृत्यशूल निकालने की साधना कर रहा है जिसे लोभ कहते हैं। अपने आप प्रार्थना निकलती है कि उनकी यह साधना सफल हो''। पूँजीवादी व्यक्तिगत मालिकाने का खात्मा करके रूस में कायम हुए समाजवाद के बारे में रवीन्द्रनाथ ने कितनी बड़ी आशा व्यक्त की थी! और वही रवीन्द्रनाथ पूँजीवादी व्यक्तिगत मालिकाने के पक्ष में लिख रहे हैं, ''सम्पत्ति है व्यक्ति के आत्मप्रकाश की भाषा, व्यक्ति की अगर सम्पत्ति न रहे, अर्थात् व्यक्ति के हाथ में अगर सम्पदा का मालिकाना न रहे, तो व्यक्ति आत्मप्रकाश नहीं कर पायेगा। ... व्यक्ति की सम्पत्ति रहेगी, जबकि उसको भोगने की एकांत स्वतंत्रता को सीमाबद्ध कर देना होगा। उस सीमा के बाहर उससे फालतू बचा हिस्सा सर्वसाधारण के लिए छोड़ देना होगा।'' अत: गांधीजी ने जिस तरह पूँजीपतियों से कहा था, ''वह स्वयं को उन लोगों का न्यासी(ट्रस्टी) समझे जिनके ऊपर वह अपनी पूँजी के निर्माण, उसकी रक्षा और उसके संवर्धन के लिए निर्भर है। ...'' , उसी तरह रवीन्द्रनाथ ने भी कहा है, ''व्यक्ति की सम्पत्ति रहेगी, जबकि उसको भोगने की एकांत स्वतंत्रता को सीमाबद्ध कर देना होगा। उस सीमा के बाहर उससे फालतू बचा हिस्सा सर्वसाधारण के लिए छोड़ देना होगा।'' मैंने पहले ही कहा था कि रवीन्द्रनाथ भी अपने दृष्टिकोण में हालांकि भाववादी थे, लेकिन गांधीजी की तुलना में वे अपनी सोच में उनसे कहीं ज्यादा तर्कशील और उदार थे। इसलिए अपनी मृत्यु से कुछ दिनों पहले, उन्होंने गहरे दु:ख के साथ कहा था कि वे किसान-मजदूरों के जीवन में प्रवेश नहीं कर सके। उनकी अनुपम शैली में काव्य रचना के जरिये इस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

भावना का इजहार करते हुए उन्होंने 'ऐकतान' (सिम्फनी) नामक अपनी कविता में लिखा था :

''सब चेये दुर्गम से मानुष आपन अन्तराले,
तार पूर्ण परिमाप नाइ बाहिरेर देशे काले।
से अन्तरमय,
अन्तर मिशाले तबे तार अन्तरेर परिचय।
पाइ ने सर्वत्र तार प्रवेशेर द्वार;
बाधा हये आच्छे मोर बेड़ागुलि जीवनयात्रार।
चाषी क्षेते चालाइच्छे हाल,
ताँती बसे ताँत बोने, जेले फेले जाल --
बहुदूर प्रसारित एदेर विचित्र कर्मभार
तारि ' परे भर दिये चलितेच्छे समस्त संसार।
अति क्षुद्र अंश तार सम्मानेर चिरनिर्वासने
समाजेर उच्च मंचे बसेछि संकीर्ण वातायने।
माझे माझे गेछि आमि उ पाड़ार प्रांगणेर धारे;
भीतरे प्रवेश करि से शक्ति छिलो ना एकबारे।''

अर्थात्
कहीं मिला नहीं उनका प्रवेशद्वार
मेरे जीने के रंग-ढंग
मेरे लिए हर कदम पर
अड़चनें बने रहे कंटीले तार
बहुत दूर तक विस्तृत हैं विविध कार्यभार
इनके (किसान-मजदूरों के) जीवन के
जिन पर होकर सवार चलता है सारा संसार
उनके सम्मान के चिर निर्वासन में
मेरा अन्तर्मन
विशाल विश्व का सबसे छोटा अंश,
समाज के सबसे ऊंचे मंच पर बैठा
एक संकीर्ण खिड़की से रहा निहार।

वे एक पहलू को तो समझ सके वह है उनके सहन-सहन के ढंग के द्वारा पैदा की गई अड़चनें। लेकिन वे अपनी दूसरी सीमाबद्ध को नहीं पहचान पाये वह है सत्य की तलाश में सही वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत को स्वीकृति देना।

गांधीजी और रवीन्द्रनाथ की नीति-नैतिकता की धारणा बुर्जुआ मानवतावाद। इसी धारणा को प्रतिध्वनित करते हुए सेकूलर मानवतावादी दार्शनिक फूयरबाख ने 'रेशनल रस्ट्रीक्शन फॉर आवरसेल्वस एण्ड लव फॉर अदर्स' की बात कही थी। इसका अर्थ होता है, मनुष्य को किसी चीज का उपभोग करने के मामले में युक्तिसंगत आत्मनियंत्रण रखना चाहिए और बाकी बचे हुए को प्यार से दूसरों को देना चाहिए। उनके इस मानवतावाद का 'मनुष्य' किसी विशेष युग के किसी विशेष वर्ग में नहीं आता है, बल्कि सब कुछ से ऊपर अमूर्त मनुष्य है इसलिए यह मानवतावादी संस्कृति और धारणा भी शाश्वत समझी जाती है। इस संदर्भ में, पूँजीवाद के प्रगतिशील युग के सेकूलर मानवतावादी और पूँजीवाद के प्रतिक्रियावादी युग के धर्म में विश्वास रखने वाले गांधीजी और रवीन्द्रनाथ का भी दृष्टिकोण वही था। इस दृष्टिकोण से सम्पत्ति पर व्यक्तिगत मालिकाना और व्यक्ति का धन-दौलत अर्जन का अधिकार और मालिक व मजदूर का फर्क सब शाश्वत हैं, अपरिवर्तनशील हैं। यह सलाह दी जाती है कि मालिक मानो 'न्यायसंगत प्राप्य' ले लें और बाकी बचा हिस्सा समाज को दे दें। किस पैमाने से यह तय होगा कि 'न्यायसंगत प्राप्य' और 'भोग की एकांत स्वतंत्रता की सीमा' कौन सी है? क्या कोई मालिक कहेगा कि वह जो मुनाफा ले रहा है, वह न्यायसंगत नहीं है? मालिकों ने ही तो कायदे-कानून बनाये हैं। उन कायदे-कानूनों के मुताबिक तो उनके द्वारा लिया गया मुनाफा न्यायसंगत, तर्कसंगत और कानूनसंगत होगा ही। यह विवेचना करना मैं आप पर छोड़ देता हूँ कि गांधीजी और रवीन्द्रनाथ के इस नजरिये के मुताबिक चलने से क्या आज के जमाने के पूँजीवाद के द्वारा पैदा की गई समस्या का समाधान सम्भव है? चौतरफा लक्ष्य कीजिये, 'हृदय परिवर्तित' हुए मालिकों द्वारा 'कम भाग्यवान श्रमिक भाइयों' को प्रतिदिन शोषण की चक्की में किस तरह पीसा जा रहा है?

आकाश से नहीं टपका है मार्क्सवादी दर्शन

इस से सहज ही समझा जा सकता है कि पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने की लड़ाई में, शोषण से मुक्ति पाने की लड़ाई में मार्क्सवाद कितना अपरिहार्य है। मार्क्सवादी चिन्तन आकाश से नहीं टपका है। यह महान मार्क्स की मनोगत प्रस्थापना भी नहीं है। अतीत में दासप्रथा के जमाने में अत्याचारित दासों की दशा की बेहतरी के लिए जिस तरह धार्मिक चिन्तन आया था, बाद के जमाने में पुराने पड़ गये सामंतवाद और राजतंत्र के खिलाफ उदीयमान पूँजीपतियों और भूदासों के संघर्ष की जरूरत से जिस तरह यान्त्रिक भौतिकवाद का दर्शन आया था, धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद और राष्ट्रवाद की धारणाएं आयी थी, उसी तरह पूँजीवादी व्यवस्था में शोषित मजदूर वर्ग की मुक्ति की जरूरत से आधुनिक विज्ञान के आधार पर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का दर्शन या मार्क्सवाद आया है। अन्य दार्शनिकों ने जहां सत्य को शाश्वत मान लिया था और इसीलिए सत्य के निर्धारण के लिए मनोगत समझ को ही परम सत्य मान लिया था, ये केवल मार्क्स ही थे जिन्होंने वस्तुगत सत्य पर पहुँचने के औजार के तौर पर निरीक्षण-परीक्षण और प्रमाण सत्यापन की वैज्ञानिक विचार-विश्लेषण पद्धति को अपनाया था। इस वैज्ञानिक विचार-विश्लेषण पद्धति के आधार पर ही उन्होंने दिखाया था कि संसार में सत्य समेत जो कुछ है वह सब शाश्वत नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील है, सापेक्ष और विशेष यानी ठोस है। इसीलिए हम पाते हैं कि मार्क्सवाद ही एकमात्र वैज्ञानिक दर्शन है। विज्ञान की विभिन्न शाखाएं फिजिक्स, केमैस्ट्री, बायोलोजी आदि प्रयोग-परीक्षण एवं सत्यापन के जरिये बार-बार साबित कर रही हैं कि सारा संसार वस्तुमय है, इस भौतिक जगत से परे कुछ नहीं है और तदनुसार अभौतिक-अलौकिक कुछ नहीं है। वस्तु के अस्तित्व के दो रूप हैं : द्रव्यमान और उर्जा। ये एक-दूसरे में रूपान्तरित हो जाते हैं। कोई आदि नहीं है, न कोई अंत है और न ही सृष्टि की कोई शुरूआत। विविध रूपों में वस्तु लगातार गतिशील है और सतत परिवर्तनशील है। फिर जब वस्तु एक विशेष रूप से किसी और दूसरे रूप में, अवस्था में रूपान्तरित हो जाती है, तो सापेक्ष अर्थ में यह उसके पूर्ववर्ती रूप का अंत होता है। कोई अप्राकृत या अलौकिक शक्ति नहीं है। सबसे अंत में खोजे गये बड़े से बड़े ग्रह से लेकर सबसे सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुकण तक सब के सब कुछ सुनिर्दिष्ट नियमों से निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील हैं। ईश्वर या अलौकिक सत्ता के अस्तित्व का विचार चूंकि विज्ञान द्वारा आविष्कृत नहीं है, और चूंकि पूरी तरह काल्पनिक है, इसलिए नाना धर्मावलम्बियों के बीच धर्म को लेकर द्वन्द्व-संघात, मतमतान्तरों का टकराव चल रहा है, यहां तक कि विरोधी धर्मों के आस्तिकों के साथ खून-खराबा और मारकाट तक मची हुई है। लेकिन विज्ञान के किसी निरीक्षित-परीक्षित और प्रमाणित सत्य या आविष्कार को लेकर वैज्ञानिकों के बीच ऐसा कोई टकराव नहीं है। मार्क्स ने इन विशेष विज्ञानों के अपने-अपने क्षेत्र में आविष्कृत विशेष नियमों को द्वन्द्वात्मक तरीके से समन्वित और संयोजित करके कुछ निर्दिष्ट आम नियम खोजे थे जो सभी परिवर्तनों के क्षेत्र में प्रयोज्य हैं और इसलिए विश्वजनीन हैं। वैज्ञानिकों ने जिस तरह किसी नियम की रचना नहीं की, वे नियम मनुष्य के मानने या न मानने से स्वतंत्र तौर पर प्रकृति जगत में काम कर रहे हैं, इसलिए खोजे गये हैं कि उन्हें मनुष्य जान कर और हिसाब-किताब लगा कर अपने कल्याण के लिए इस्तेमाल कर सके। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सर्वजनीन नियम भी वैसे ही हैं, पहले से ही मनुष्य के मानने या न मानने से स्वतंत्र रूप में क्रियाशील थे। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के इन सर्वजनीन नियमों को इस्तेमाल करके ही मार्क्स ने यह खोजा था कि मानव समाज की प्रगति व विकास का क्रम किसी दैवी शक्ति द्वारा निर्धारित या आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह भी सुनिर्दिष्ट वैज्ञानिक नियमों द्वारा नियन्त्रित है। वे नियम भी इस मकसद से मार्क्स ने खोजे थे कि समाज विकास व प्रगति में अन्तर्निहित क्रियाशील इन नियमों की प्रक्रिया को त्वरित करके मनुष्य सचेत रूप से सामाजिक परिवर्तन कर सके।

उन्होंने दिखाया था कि आदिम समाज में स्थायी सम्पत्ति और व्यक्तिगत मालिकाना नहीं था, अमीर-गरीब का भेद नहीं था, स्थायी सम्पत्ति आने के बाद व्यक्तिगत मालिकाने को केन्द्र करके समाज वर्ग-विभाजित हुआ। वर्ग-विभाजित समाजों में पहला आया था दास-दासप्रभु समाज। उसके बाद राजतंत्र आया, फिर उसके बाद पूँजीवाद आया। समाज विकास के इसी अटल नियम के क्रम में समाजवादी समाज कायम किया जायेगा जो आगे और विकास की प्रक्रिया में साम्यवाद के स्तर तक ऊंचा उठाया जायेगा। यह सतत परिवर्तन और विकास चलता रहेगा। प्राकृतिक नियम किसी मनुष्य के मानने या न मानने से स्वतंत्र रूप में या चेतना से निरपेक्ष तौर पर काम करते रहते हैं। मानव समाज में मनुष्य की चेतना विकास की नियम-नियंत्रित इस प्रक्रिया को त्वरित कर सकती है या फिर बाधा डाल कर विलम्बित भी कर सकती है। मार्क्स ने यह भी व्याख्या की कि दास प्रथा के जमाने में समाज वर्ग-विभाजित होने से लेकर आज तक समाज में जितने परिवर्तन हुए हैं वे सब वर्ग-संघर्ष के आधार पर ही हुए हैं, सत्तासीन शोषक-उत्पीड़क वर्गों ने परिवर्तन के नियम में रुकावट पैदा करनी चाही तो वे कहलाये प्रतिक्रियावादी। दूसरी तरफ, शोषित वर्गों ने परिवर्तन को त्वरित करने के लिए संघर्ष किया, वे हैं प्रगतिशील। इसी क्रम में दासों ने सामंतवाद कायम करने के लिए दास प्रथा को उखाड़ फेंका, बाद में भूदासों व उदीयमान पूँजीपतियों ने सामंतवाद को उखाड़ फेंका और अब मजदूर वर्ग भी पूँजीवाद को उखाड़ फेंकेगा। दासों का वैचारिक हथियार था तत्कालीन धार्मिक चिन्तन। उदीयमान पूँजीपतियों और भूदासों ने पार्थिव अर्थात् धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद या धार्मिक प्रभाव से मुक्त मानवतावाद और यान्त्रिक भौतिकवाद की विचारधारा के आधार पर लड़ाई लड़ी थी। मजदूर वर्ग का वैचारिक हथियार है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद। इस द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का इस्तेमाल करते हुए मार्क्स ने दिखाया था कि सारी धन-सम्पदा, यहाँ तक कि पूँजी का भी सृजन करने वाली शारीरिक व मानसिक, दोनों तरह की श्रमशक्ति ही होती है। पूँजीवादी व्यवस्था में श्रमशक्ति के साथ-साथ उत्पादित पण्य अर्थात् बिकाऊ माल का चरित्र भी सामाजिक होता है क्योंकि समाज के बाजार की मांग को पूरा करने के लिए ही माल उत्पादित होता है। लेकिन उत्पादन के साधनों पर मालिकाना व्यक्तिगत होता है, उत्पादन भी व्यक्ति पूँजीपति मालिकों के मुनाफे के लिए किया जाता है। उन्होंने गणित के तौर पर हिसाब लगाकर दिखाया था कि मजदूरों को न्यायोचित मजदूरी से वंचित करके ही, मजदूर को जो देनी थी उस मजदूरी का भुगतान न किये गये सरप्लस श्रम को हड़प कर ही मालिक मुनाफा कमाते हैं। शोषित जनता ही बाजार में ज्यादातर खरीददार या ग्राहक होती है। अगर उसकी क्रयशक्ति कम होती है तो अनिवार्यत: बाजार का संकट, मंदी आ जाती है। इसकी सहवर्ती के तौर पर तालाबंदी, छंटनी, बेरोजगारी आने लगती है और जिस औद्योगिक क्रान्ति का झण्डा फहराते हुए एक दिन बुर्जुआ वर्ग आया था, वही बाद के दौर में औद्योगिक संकट पैदा करने लगता है। मुट्ठी भर चंद लोगों के हाथ में औद्योगिक पूँजी बाजार पर कब्जा करने के कम्पीटीशन में छोटी पूँजी को हरा करके और बाजार से उसका सफाया करके बड़ी से बड़ी होती जाती है। यह मजदूरों का भीषण शोषण करके अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की होड़ है। जिस पूँजीवाद ने अपने उदयकाल में उद्योग-धंधे, ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य के क्षेत्र सभ्यता की प्रगति में चार चाँद लगाये थे, वही पूँजीवाद प्रतिक्रियावादी दौर में इन सब क्षेत्रों में चौतरफा संकट पैदा कर रहा है। बाद में महान लेनिन ने दिखाया था कि पूँजीवाद एकाधिकारी पूँजी, वित्तीय पूँजी को जन्म देकर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 5 का शेष)

और भी ज्यादा संकट पैदा कर रहा है। साम्राज्यवादी स्तर में पहुँच कर यह धड़ल्ले से युद्ध पैदा कर रहा है, दूसरे देशों पर जबरन कब्जा जमा रहा है और लूट-खसोट चलाता जा रहा है। बराबरी-आजादी-भाईचारे के झण्डे को धूल में फेंक दिया है। साम्राज्यवाद है पूँजीवाद का चरम प्रतिक्रियावादी मरणासन्न स्तर। बाद में महान स्टालिन ने दिखाया था कि घोर संकटग्रस्त पूँजीवाद के स्तर में पूँजीपतियों की जरूरत मजदूरों के सर्वाधिक शोषण करके सर्वोच्च मुनाफा कमाना होती है। उपभोग्य माल का बाजार संकुचित हो जाने से विकसित पूँजीवादी देश युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों के बाजार अर्थात् अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण की तरफ रुख कर रहे हैं। बाजार का सापेक्ष स्थायीत्व भी अब नहीं रहा है। बुर्जुआ वर्ग के लिए 'आजादी' का मतलब अब हो गया है मजदूरों का शोषण करने की बेलगाम आजादी। उनके लिए मजदूर हैं 'मनुष्यरूपी कच्चा माल'। इसके कुछ समय बाद महान शिवदास घोष ने दिखाया था कि पूँजीवाद अब सुबह-शाम के बाजार संकट में फंस गया है। विकसित हों या पिछड़े, सभी पूँजीवादी देश अर्थव्यवस्था के सैन्यीकरण का सहारा ले रहे हैं। सभी पूँजीवादी देशों में मानवता का घोर दुश्मन फासीवाद विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा है। उन्होंने दिखाया था कि फासीवाद ''इन्सान बनने की प्रक्रिया को ही ध्वस्त कर देता है''। उन्होंने हमें यह और दिखाया था कि हमारे देश सहित सभी पूँजीवादी देशों में न केवल आर्थिक संकट, बल्कि इन्सानियत में गिरावट और मूल्यबोधहीनता का संकट भी तेजी बढ़ता जा रहा है, पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन को प्रदूषित कर रहा है और स्नेह-ममता-प्यार, कोमल भावनाओं और सूक्ष्म अनुभूतियों को खत्म कर रहा है, चिन्तन-शक्ति, वैज्ञानिक सोच व कर्तव्यबोध को नष्ट कर रहा है और सोच को एक खास सांचे में ढालने को बढ़ावा दे रहा है। इस तरह से महान मार्क्सवादी अथोरिटियों ने सिलसिलेवार पूँजीवाद के लगातार बढ़ते संकट के तरह-तरह के रुख-पहलुओं को दर्शाया है और यह भी दर्शाया है कि सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में समाजवादी क्रान्ति ही मुक्ति का इतिहास द्वारा निर्धारित एकमात्र मार्ग है। जिस तरह जाने-माने वैज्ञानिकों द्वारा किये गये आविष्कारों से प्राकृतिक विज्ञान को लगातार उन्नत और समृद्ध किया गया है, उसी तरह उसके साथ सामंजस्य रखते हुए और सामाजिक जीवन में पैदा होने वाले विभिन्न सवालों व समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में सही जवाब देने के क्रम में मार्क्स-एंगेल्स के बाद के जमाने में एक पर एक लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग और शिवदास घोष ने भी मार्क्सवाद को और भी उन्नत और समृद्ध किया है। इसलिए इसे हम कहते हैं मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा। हम दृढ़ता के साथ कहना चाहते हैं कि एकमात्र इस महान विचारधारा से दिशा निर्देशन पाकर मजदूर वर्ग के नेतृत्व में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति सफल करके ही मौजूदा समस्याओं का समाधान सम्भव है।

समाजवाद में क्यों रहता है प्रतिक्रान्ति का खतरा

ऐन स्वाभाविक तौर पर आप पूछ सकते हैं कि समाजवाद कायम हो जाने के बाद भी प्रतिक्रान्ति के द्वारा ढहा कर दोबारा फिर रूस, चीन और पूर्वी यूरोपीय देशों में जब पूँजीवाद वापस आ गया, तो प्रतिक्रान्ति को कैसे रोका जाये? मार्क्सवाद के बारे में सही समझ न रहने से और समाजवाद की असाधारण प्रगति को लक्ष्य करके एक समय न केवल आम लोग, बल्कि कम्युनिस्ट मनोभाव वाले अनेक लोग भी मानते थे कि समाजवाद के बाद और कोई गड़बड़ नहीं हो सकती। लेकिन किन-किन कारणों से प्रतिक्रान्ति हो सकती है उसकी चेतावनी देते हुए और किस तरह इससे बचाव के कौन-कौन से कदम उठाने होंगे, इस बारे में मार्क्सवादी चिन्तनकार सिलसिलेवार कई मूल्यवान सीख दे गये हैं। क्रान्ति-पूर्व दौर में, मार्क्स ने सर्वहारा के अधिनायकत्व और समाज की व्याख्या इन शब्दों में की है: *"पूँजीवादी और कम्युनिस्ट समाज के बीच एक के दूसरे में क्रान्तिकारी रूपांतरण का काल है।"* इसका मतलब यह है समाजवाद पूँजीवाद से कम्युनिज्म के बीच एक संक्रमण-कालीन दौर है। अगर सही रास्ते का अनुकरण किया जाये, तो समाजवाद कम्युनिज्म की और ले जायेगा। दूसरी तरफ, अगर बुर्जुआ प्रति-क्रान्ति के हमले को वापस नहीं धकेला गया, तो पूँजीवाद वापस आ जायेगा। उन्होंने और भी स्पष्ट तौर पर कहा था कि शुरूआती स्तर में, कम्युनिज्म की पहली अवस्था यानी समाजवाद अपनी खुद की बुनियादों को विकसित करने में अभी सक्षम नहीं हुआ है। उनके शब्दों में, *"यहाँ हमारा वास्ता (वर्कर्स पार्टी के कार्यक्रम का विश्लेषण करने में) उस कम्युनिस्ट समाज से नहीं है, जो अपनी ही बुनियादों पर विकसित हुआ है, बल्कि, इसके विपरित, उससे है, जो पूँजीवादी समाज से उदित हो रहा है, इस कारण जो आर्थिक, नैतिक और बौद्धिक, हर मायनों में अभी भी उस पुराने समाज की छापें लिये हुए है, जिसके गर्भ से वह निकला है"।* इतने वर्षों पहले यह कहने में मार्क्स ने कितनी दूरदृष्टि प्रतिबिम्बित की है कि समाजवाद के अन्दर वैचारिक, आर्थिक और नैतिक क्षेत्रों में बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव विद्यमान रहता है और समाजवाद एक संक्रमणकालीन चरण के सिवा और कुछ नहीं है। रूस में सफलतापूर्वक समाजवादी क्रान्ति सम्पन्न करने के बाद लेनिन ने कहा था : ''यह संक्रमण-काल मरणोन्मुख पूँजीवाद तथा विकासोन्मुख कम्युनिज्म के बीच, या दूसरे शब्दों में, जो पराजित हो चुका है, पर अभी नष्ट नहीं हुआ है उस पूँजीवाद तथा उस कम्युनिज्म के बीच संघर्ष का काल ही हो सकता है, जो पैदा हो चुका है, पर अभी बहुत कमजोर है।'' उन्होंने यह भी कहा था : ''सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व एक बहुत ही कठिन और निर्मम युद्ध है जो एक नया वर्ग अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु, पूँजीपति वर्ग के खिलाफ चलाता है, जिसकी पराजय से (भले ही वह केवल एक देश में पराजित हुआ हो) उसका प्रतिरोध दस-गुना बढ़ जाता है और जिसकी शक्ति अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी की शक्ति में ही निहित नहीं है, जिसकी ताकत पूँजीपति वर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की ताकत और मजबूती में ही नहीं पायी जाती, बल्कि वह आदत की ताकत में भी पायी जाती है, उसकी शक्ति छोटे पैमाने के उत्पादन की शक्ति में भी निहित है।'' उन्होंने आगे दिखाया था कि, "लाखों-करोड़ों इन्सानों की आदत की ताकत एक भयंकर ताकत होती है.....छोटे पैमाने का उत्पादन अब भी दुनिया में बहुत, बहुत फैला हुआ है और यह छोटे पैमाने का उत्पादन लगातार, हर दिन, हर घंटे, अपने-आप और बड़े पैमाने पर पूँजीवाद और पूँजीपति वर्ग को पैदा करता रहता है।'' आपको यह जान लेना चाहिए कि क्रान्ति के बाद के रूस में निश्चित वस्तुगत कारणों से छोटी पूँजी विभिन्न रूपों में मौजूद थी। जब तक सारी जनता मार्क्सवाद को अंगीकार नहीं कर लेती, तब तक एक समाजवादी देश में भी जनता में कई बुर्जुआ विचारों, संस्कृति और आदत की शक्तियों का प्रभुत्व रहता है। अब देखिये स्टालिन ने क्या कहा है। उन्होंने 1929 में कहा था, ''समाजवाद की जितनी प्रगति हो रही है, वर्ग-संघर्ष उतना ही तीव्रतर होता जा रहा है।'' मृत्यु से एक साल पहले उन्होंने 1952 में 19वीं पार्टी कांग्रेस में कहा था, ''हमारे देश में सोवियत राष्ट्रविरोधी शक्तियों को पूरी तरह ध्वस्त नहीं किया गया है, देश के अन्दर से ये शक्तियाँ और बाहर से पूँजीवादी देश समाजवाद-विरोधी चिन्तन, विचारधारा का प्रचार करते जा रहे हैं। यह भूल जाना ठीक नहीं होगा कि हमारे समाज में जो अनुन्नत, अस्थिर हैं उन्हें पथभ्रष्ट करने के लिए ये अस्वास्थ्यकर विचारधारा और सेन्टीमेंण्ट का प्रचार कर रहे हैं। ... जिन सब वैचारिक क्षेत्रों में पार्टी का नेतृत्व ढील दे रहा है, वहीं लेनिनवाद-विरोधी गुट घुसपैठ करते जा रहे हैं और अपनी राजनैतिक लाइन का प्रचार कर रहे हैं। ... हमारे देश में अभी तक भी बुर्जुआ भावादर्श के अवशेष (vestiges) बचे हुए हैं, व्यक्तिगत मालिकाने की मानसिकता और नैतिकता के बचे-खुचे अंश (relics) बरकरार हैं। वे अपने आप खत्म नहीं होते हैं; वे चिपटे रहने की क्षमता रखते हैं और अपनी पकड़ मजबूत कर सकते हैं, ... वैचारिक संघर्ष पार्टी का प्रधान काम है, इसके महत्व को कम करके देखने से पार्टी और राज्यसत्ता की अपूरणीय क्षति होगी। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि समाजवादी विचारधारा का प्रभाव कम होने से बुर्जुआ विचारधारा का प्रभाव मजबूत होगा।'' जिस समय स्टालिन ने यह वक्तव्य रखा था, उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध में फासिस्ट ताकतों को परास्त करके सोवियत यूनियन और स्टालिन दुनिया की श्रद्धा के आसन पर बैठे थे और युद्ध में सबसे ज्यादा क्षतिग्रस्त होने पर भी पुनर्निर्माण में जबरदस्त तरक्की करके संयुक्त राज्य अमेरिका को भी बहुत सारे मामलों में पीछे छोड़ दिया था, इसके बावजूद, उन्होंने अत्यंत गहरी चिन्ता के साथ ये बातें कही थी और नेताओं के बीच आत्मसंतुष्टि के मनोभाव को लक्ष्य करके कड़ी आलोचना की थी। यह निश्चित है कि अगर वे जिन्दा रहते तो इन सब खतरों का मुकाबला करते हुए समाजवाद की रक्षा करते, जिस तरह लेनिन की मृत्यु के बाद बार-बार समाजवाद को पैदा हुए खतरे से बचाया था। बाद में ख्रुश्चेव नेतृत्व ने स्टालिन की इस चेतावनी को महत्व देना तो दूर की बात रही, उल्टे स्टालिन के खिलाफ दुष्प्रचार अभियान चला कर लेनिनवाद की इस अथोरिटी पर चोट करते हुए संशोधनवादी रास्ते पर चल कर पूँजीवाद की पुनर्स्थापना का रास्ता खोल दिया था। 1956 में हुई 20वीं पार्टी कांग्रेस में ख्रुश्चेव के स्टालिन-विरोधी निन्दा अभियान के प्रसंग में यही आशंका कॉमरेड शिवदास घोष ने व्यक्त की थी। महान माओ त्से-तुंग की मृत्यु से पहले चीन में पूँजीवादी प्रतिक्रान्तिकारी साजिश के खिलाफ ऐतिहासिक सांस्कृतिक क्रान्ति छेड़ते हुए माओ त्से-तुंग ने कहा था, ''हालांकि बुर्जुआ वर्ग को सत्ता से हटा दिया गया है, फिर भी शोषक वर्ग दोबारा सत्ता में वापस आने के लिए जनता की मानसिकता को पथभ्रष्ट करने के उद्देश्य से पुरानी सोच, भावना, संस्कृति, आदत और आचरण को इस्तेमाल कर रहा है। ... वर्तमान में हमारे संघर्ष के निशाने पर हैं, (राजसत्ता और पार्टी के) सत्तारूढ़ व्यक्ति, जो पूँजीवादी रास्ता अख्तियार किये हुए हैं। ... चूंकि सांस्कृतिक क्रान्ति एक तरह की क्रान्ति ही है, जिससे यह अवश्यम्भावी तौर पर विरोध को न्योता दे रही है। विरोध मुख्यतया उन्हीं की ओर से आ रहा है जो पार्टी के अन्दर घुस कर सत्तासीन होकर पूँजीवादी रास्ते पर चल रहे हैं।'' उनकी मृत्यु के बाद इन्हीं कैपिटलिस्ट रोडरों ने सत्ता हथिया कर चीन में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना कर दी।

कॉमरेड शिवदास घोष की सीख और चेतावनी

इस प्रसंग में, आपको कॉमरेड शिवदास घोष की कुछ मूल्यवान शिक्षाओं और चेतावनियों से परिचित होने की जरूरत है। 1948 में, पार्टी स्थापना के वर्ष ही उन्होंने कहा था : ''विश्व साम्यवादी आन्दोलन की अनेकानेक उपलब्धियों, सफलताओं और शानदार कुर्बानियों को उचित गर्व और श्रद्धा के साथ मान्यता देते हुए भी हम इसमें मौजूद गंभीर कमियों की तरफ ध्यान दिलाने में एक पल के लिए भी नहीं चूके हैं। ... ये गंभीर कमी-खामियाँ अधिकांशत: इस सच्चाई के कारण हैं कि विश्व साम्यवादी खेमे का मौजूदा नेतृत्व काफी हद तक चिन्तन की यान्त्रिक प्रक्रिया से प्रभावित है ... इसका अन्तत: नतीजा यह हुआ कि विचारों की अन्तर्क्रिया के माध्यम से क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट नेतृत्व के उभरने-बनने की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तजुर्बों की कसौटी पर खरे उतरे मार्क्सवादी विज्ञान को ही नकार दिया गया है।'' इसके लिए कम्युनिस्ट चेतना के स्तर को जिम्मदार मानते हुए उन्होंने दिखाया था : ''साम्यवादी आन्दोलन की सांगठनिक प्रगति के बावजूद वैचारिक स्तर में ऐसी गिरावट आ सकती है—यह कोई नई परिघटना नहीं है। खुद लेनिन को ही अपने जीवनकाल में इस परिघटना पर विशेष

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 4 का शेष)

ध्यान देना पड़ा था। ... लेनिनोत्तर काल में यह देखा गया कि जनजीवन और वर्ग-संघर्ष की नई नई समस्याओं की अधिकता और प्राकृतिक विज्ञान में हुई हैरतअंगेज प्रगति के चलते मार्क्सवाद-लेनिनवाद का जो दार्शनिक विकास कराया जाना चाहिए था, वह नहीं कराया गया। ... वैचारिक क्षेत्र में व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता के बारे में बुर्जुआ भावना-धारणा आज विकसित देशों में वर्ग-संघर्ष के रास्ते में एक कठिन बाधा है। मानवतावादी मूल्यबोध बनाम सर्वहारा मूल्यबोधों की तुलनात्मक रूप से समीक्षात्मक चर्चा करना हालात का तकाजा है। ...

''जो सामाजिक स्वार्थ के सामने व्यक्तिगत स्वार्थ को बिना शर्त मातहत कर सकते हैं, हर वक्त पार्टी व क्रान्ति के स्वार्थ को ऊपर मानते हैं एवं उसके सामने व्यक्तिगत स्वार्थ को बिना शर्त सरेण्डर कर सकते हैं, वहीं सच्चे कम्युनिस्ट हैं–आज तक कम्युनिस्ट मूल्यबोध का सर्वोच्च स्तर यही था। कालिनिन की किताब 'कम्युनिस्ट एज्युकेशन' में इसे ही सही कम्युनिस्ट चेतना का उच्चतर स्तर कहा गया है। ... लेकिन आज के जीवन की नई नई जटिलताओं के संदर्भ में यह ऊँचे दर्जे के सच्चे कम्युनिस्टों का पर्याप्त स्तर नहीं रह सकता। ... व्यक्ति का मुक्ति-संग्राम एक नई व जटिल चरण में पहुँच गया है और समाजवादी समाज में एक नया रूप धारण कर लिया है–जहाँ इस समस्या के समाधान के लिए निरंतर साधना व संघर्ष के जरिये व्यक्तिगत स्वार्थ को सामाजिक स्वार्थ के साथ पूरी तरह विलय कर देने के लिए और भी जोरदार कठोर संघर्ष चलाना होगा। अतएव, न्याय-नीति व मूल्यबोध का यह एक नया स्तर है जो पुराने बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यबोध जिन्हें कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आन्दोलन में कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने के लिए अब तक इस्तेमाल किया जाता रहा,, उससे उन्नततर और बुनियादी तौर पर सम्पूर्णत: भिन्न है।'' उन्होंने दिखाया कि ''अगर यह नहीं किया गया, तो ''समाजवादी व्यक्तिवाद'' उभर कर आयेगा और लगातार मांग उठेगी कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्ति के अधिकारों को और भी बढ़ाया जाये और इस प्रक्रिया के इस तरह चलते रहने से यह फिर संशोधनवाद को जन्म देगा और पूँजीवाद को ही वापस लाने में मदद करेगा।'' सोवियत यूनियन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा था कि समाजवादी मालिकाने की काफी ज्यादा प्रगति के बाद भी, ''... वहाँ सामूहिक खेती की प्रणाली है, पण्य उत्पादन व परिचालन की प्रणाली है और निजी सम्पत्ति जैसे घर-द्वार, रुपये-पैसे, बैंक बैलेन्स आदि है, मूल्य का नियम लागू है। इन सब बातों से यह प्रतिबिम्बित होता है कि वहाँ निजी सम्पत्ति का बीज नष्ट नहीं हुआ है और जब तक यह रहता है, तब तक अर्थव्यवस्था में समाज के अन्दर पूँजीवाद की पुनर्स्थापना का रुझान भी बना रहता है। ... परन्तु मात्र आर्थिक कारकों ने ही खुद-ब-खुद संशोधनवाद नहीं ला दिया। उनमें इसे लाने की ताकत ही वहाँ मौजूद नहीं थी। राजनीतिक चेतना के निम्न स्तर ने इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। ... इसे रोकने के लिए एक तरफ पार्टी के अन्दर लगातार सांस्कृतिक क्रान्ति और वैचारिक संघर्ष चला कर वैचारिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में चेतना का उन्नत स्तर बरकरार रखने की, दूसरी तरफ, सिर्फ आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि मानव जीवन को केन्द्र कर बदले हुए परिवेश में उभर कर आ रही नई नई समस्याओं से निपटने के लिए मार्क्सवाद को लगातार समृद्ध करने की जरूरत थी। ... संस्कृति एवं ज्ञान का स्तर निम्न रहने से पूरी पार्टी व पूरा मजदूर वर्ग गुमराह होकर गलत रास्ते भटक कर समाजवाद के नारे देते हुए तथा मार्क्सवाद का झण्डा फहराते हुए ही सुधारवाद व संशोधनवाद के रास्ते पूँजीवाद को पूरी तरह वापस ला सकता है।''

अब तक महान मार्क्स से लेकर एक पर एक उनके सुयोग्य उत्तराधिकारियों ने धारावाहिकता में किस तरह नई-नई पैदा हुई परिस्थितियों में किन-किन कारणों से समाजवाद में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना हो सकती है और किस तरह ऐसा होने से रोका जा सकता है, इस बारे में क्या-क्या कहा है, वह आपके सामने पेश किया और आपने भी धीरज के साथ सुना। आपने देखा कि ऐसी बात नहीं थी कि समाजवाद के लिए यह खतरा मार्क्सवादी चिन्तनकारों ने नहीं भाप लिया था। उन्होंने चेतावनी दी थी, समाजवाद में पूँजीवादी हमले का प्रतिरोध करने का रास्ता भी दिखाया था। लेकिन उनका महत्व न समझ पाने से और उनके दिखाये रास्ते का अनुसरण न करने के नतीजतन ही प्रतिक्रान्ति समाजवाद को ढहा सकी। इतिहास से यह सीख लेनी होगी कि कोई भी नया आदर्श, कोई भी नई सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से विजयी होनी है तो सैकड़ों साल हार-जीत के रास्ते पर रक्तरंजित लड़ाई लड़नी पड़ती है। जिस धर्म के बारे में यह दावा किया जाता है कि उसे दैवी-शक्ति प्राप्त है, उस हर धर्म को ही पूर्ण जीत के लिए सैकड़ों साल लड़ाई लड़नी पड़ी थी। इसी तरह राजतंत्र के खिलाफ रेनेसां (नवजागरण) से लेकर बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति को भी 350 साल लड़ाई लड़नी पड़ी थी। ये दोनों ही लड़ाइयाँ वर्ग शोषण के खात्मे की लड़ाइयाँ नहीं थी, ये थी एक तरह के शोषण के बदले दूसरी तरह के शोषण कायम करने की लड़ाई। जबकि समाजवादी क्रान्ति है दासप्रथा से राजतंत्र और पूँजीवाद तक कई हजार साल के वर्ग शासन शोषण के खात्मे की क्रान्ति, इस मायने में रूस में 70 साल टिके समाजवाद की शक्ति साम्राज्यवाद-पूँजीवाद से घिरी दुनिया में कितनी थी! इसलिए हताशा का कोई कारण नहीं है। इससे सबक लेकर अगली समाजवादी क्रान्ति सफल करनी होगी और उसकी रक्षा करनी होगी। जैसे 1871 में फ्रांस के मजदूर वर्ग ने रक्तरंजित लड़ाई लड़ कर पेरिस कम्यून कायम किया था लेकिन कुछ महीने बाद ही पूँजीपतियों ने उनको सत्ता से हटा कर हजारों हजार मजदूरों को मौत के घाट उतार दिया था। मार्क्स ने इससे सीख ली थी कि महज पूँजीपतियों को सत्ता से हटा देने से ही काम नहीं चलेगा, पूँजीवादी राजसत्ता को चकनाचूर करके मजदूर वर्ग की नई राजसत्ता गठित करनी पड़ेगी। लेनिन ने इस शिक्षा को रूस की क्रान्ति में कार्यान्वित किया था। हम जो आने वाले समय में क्रान्तिकारी संग्राम संगठित करेंगे, उन्हें मार्क्सवादी शिक्षकों की अमूल्य शिक्षाओं को याद रखना होगा, ताकि पूँजीवाद लौट कर वापस न आ सके। हमें समझना होगा, समाजवाद में केवल आर्थिक, राजनैतिक आमूल परिवर्तन ही नहीं, बल्कि ऊपरी ढांचे में भी अलग वैचारिक-सांस्कृतिक संघर्ष लगातार चलाते हुए आमूल परिवर्तन करना होगा। वरना वहीं से प्रतिक्रान्तिकारी हमला आयेगा।

याद रखें, इतिहास के अटल नियम से ही समाजवाद आया है, मार्क्सवादी शिक्षकों की मूल्यवान चेतावनी और शिक्षाओं को महत्व न देने से और भारी भूल-भ्रान्ति होने से पूँजीवाद वापस आ सकता है, लेकिन इतिहास के अटल नियम से ही दोबारा फिर समाजवाद विजयी होकर आयेगा और टिका रहेगा। इसके सिवा मानव सभ्यता का भविष्य और क्या है? समाजवाद ढह जाने के बाद आज रूस, चीन, पूर्वी यूरोप के करोड़ों करोड़ लोग गरीबी, बेरोजगारी, छंटनी, महंगाई सहित विविध संकटों से जर्जरित होकर हाहाकार कर रहे हैं, दोबारा फिर समाजवाद वापस लाने की व्याकुल आकांक्षा व्यक्त कर रहे हैं। यह अनिवार्य नियम मान कर अपने आप आ जाएगा, ऐसी बात नहीं है, संकट से जर्जरित लोग लाजिमी तौर पर मुक्ति का रास्ता खोजेंगे, अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार रास्ता दिखायेंगे और शोषित जनता सचेत रूप से क्रिया करके परिवर्तन के नियम की क्रिया को त्वरित करेंगी, अर्थात् क्रान्ति संगठित करेंगी। यह प्रक्रिया जितनी विलम्बित होगी, उतना ही संकट बढ़ता जायेगा।

दुनिया के तत्कालीन महापुरुषों ने महान स्टालिन की श्रेष्ठता और योगदान के प्रति जतायी थी श्रद्धा

याद रखें, लेनिन के सुयोग्य छात्र स्टालिन के नेतृत्व में संचालित होकर सोवियत यूनियन में समाजवाद ने बेमिसाल तरक्की करके मानव इतिहास में पहली शोषणमुक्त जिस सभ्यता का निर्माण किया था, उसे देख कर मार्क्सवादी न होते हुए भी बीसवीं सदी के आदर के योग्य मानवतावादी और स्वतंत्रता सेनानी, यूरोप में रोमां रोलां, बर्नार्ड शा, आइन्स्टीन, हमारे देश के रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, सुभाष चन्द्र बोस, प्रेमचन्द, सुब्रमणम भारती और कई नामीगिरामी राजनीतिज्ञों, चिन्तकों ने पाश्चात्य पूँजीवादी सभ्यता की परिणति से घिन हो जाने पर सोवियत यूनियन को ही एकमात्र आशा की किरण मान कर गहरी श्रद्धा के साथ अभिनन्दन किया था, शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने खुद को मार्क्सवादी के रूप में घोषणा की थी। रवीन्द्रनाथ ने क्या कहा था इसका उल्लेख मैं पहले ही कर चुका हूँ। अब सुनिये अन्य कुछ महापुरुषों के कथन। मनीषी रोमां रोलां ने कहा था, '' मैं सोवियत यूनियन के लक्ष्य और कर्म में विश्वास करता हूँ। जब तक जिन्दा रहूँगा, तब तक उसके पक्ष में काम करता जाऊँगा।'' विश्वविख्यात बर्नार्ड शा ने कहा था, ''दुनिया में आजादी और लोकतंत्र एक ही देश में है, वह है सोवियत यूनियन, जहाँ महान स्टालिन जिन्दा है।'' नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था, ''उन्नीसवीं सदी को जर्मनी ने उसके मार्क्सीय दर्शन के जरिये उल्लेखनीय रूप से विश्व सभ्यता को देन दी थी, बीसवीं सदी में रूसी सर्वहारा क्रान्ति, सर्वहारा सरकार और संस्कृति के क्षेत्र में अपनी देन के जरिये दुनिया की संस्कृति व सभ्यता को समृद्ध किया है।'' आईएनए फौज परास्त हो जाने के बाद सिंगापुर के बेतार केन्द्र से आशा का सन्देश सुनाते हुए कहा था, ''आज अगर यूरोप में ऐसा कोई अकेला आदमी है जिसके हाथों में आगामी कई सालों तक यूरोपीय राष्ट्रों का भाग्य बदा है, तो वे हैं मार्शल स्टालिन। इसलिए भविष्य में सोवियत यूनियन क्या करता है, नहीं करता है उसकी तरफ सर्वाधिक उत्सुकता से पूरी दुनिया और सर्वोपरि यूरोप टकटकी लगाये ताकता रहेगा। ... युद्धोत्तर यूरोप में, एक ही शक्ति है जिसके पास योजना है, और वह शक्ति है सोवियत यूनियन। इसलिए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यूरोपीय राष्ट्रों के पास इस योजना को यूरोप की सरजमीं पर लागू करने के सिवा और काई चारा नहीं है, जो योजना सोवियत यूनियन में इतनी ज्यादा सफल हुई है।'' आजकल बुद्धिभ्रष्ट, पैसों में बिके हुए जो सब बुद्धिजीवी मार्क्सवाद, समाजवाद और महान स्टालिन के खिलाफ दुष्प्रचार कर रहे हैं, क्या यथार्थ में वे बुद्धिजीवी हैं? या ऊपर जिन नामों का जिक्र किया गया है, वे यथार्थ में बुद्धिजीवी थे? आप खुद विचार करके देखें।

वैचारिक मतभेद के बावजूद, उस समय ऐसा कोई भी आदर के योग्य साहित्यकार, चिंतक और राजनीतिज्ञ नहीं था जो स्टालिन की श्रेष्ठता और महत्व की कद्र न करता हो। 1956 में बुर्जुआ एजेण्ट ख्रुश्चेव ने रूस की सत्ता में बैठ कर जब इस महान नेता के खिलाफ कुत्सा फैलाना, दुष्प्रचार करना शुरू किया तो उसके बारे में कॉमरेड शिवदास घोष ने चेतावनी देते हुए कहा था, ''... अपने पूर्वज मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की तरह स्टालिन भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की अथोरिटी हैं। इसीलिए स्टालिन को मिटा डालने का अनिवार्य परिणाम होगा उनकी अथोरिटी को अस्वीकार करना, जिसका मतलब है लेनिनवाद के बारे में उनकी समझदारी –जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में आज के दिनों की सही समझदारी है–उसी को अस्वीकार करना। ... इसके द्वारा मार्क्सवाद-लेनिवाद के नाम पर जितनी प्रतिक्रान्तिकारी सोच-विचार है उसको लाने का रास्ता खोल देना और साम्यवादी आन्दोलन की वैचारिक बुनियाद को क्षतिग्रस्त कर देना।'' वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। इसलिए आज मार्क्सवाद प्रचार और अपनाने का संघर्ष, समाजवादी क्रान्ति करने का संघर्ष और महान स्टालिन के खिलाफ दुष्प्रचार को परास्त कर उसे यथार्थ मर्यादा के आसन पर पुन:प्रतिष्ठित करने का संघर्ष ओतप्रोत रूप से जुड़ा हुआ है।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing : 20 November, 2015

सर्वहारा दृष्टिकोण

23 नवबर, 2015

आम लोगों का और भी खून निचोड़ने के लिए बीजेपी सरकार के नितांत जनविरोधी फैसले का एसयूसीआई(सी) ने किया विरोध

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 8 नवम्बर, 2015 को जारी एक बयान में कहा :

बिहार विधान सभा चुनावों के समापन के तुरंत बाद बीजेपी सरकार ने संसद को दरकिनार करते हुए प्रशासनिक फरमान के जरिये बहुत सारे जनविरोधी कदमों की घोषणा की है। इन कदमों में शामिल हैं 1) सेवा कर के दायरे में आने वाली तमाम सेवाओं पर 0.5 प्रतिशत की दर से लोगों पर 'स्वच्छ भारत सेस' थोप दिया है जिसके चलते सेवा कर 14 प्रतिशत से बढ़ कर 14.5 प्रतिशत हो जाएगा; 2) रेल टिकटों को रद्द कराने का शुल्क दोगुना कर दिया गया है और गाड़ी छूटने से चार घण्टे पहले यदि टिकट रद्द नहीं कराया तो कोई रिफण्ड नहीं मिलेगा; और 3) सरकार द्वारा निर्धारित सीमा से ऊपर आमदनी वाले परिवारों से रसोई गैस सब्सिडी वापस ली जायेगी।

इन जनविरोधी कदमों के चलते लोगों पर भारी आर्थिक बोझ पड़ेगा जो पहले से ही गरीबी, बेरोजगारी और आकाश छूती महंगाई की चक्की में पिस रहे हैं। इन कदमों ने एक बार फिर केन्द्र में सत्तासीन बीजेपी सरकार का जनविरोधी और पूँजीपति-परस्त चेहरा उजागर कर दिया है। इससे ज्यादा हास्यास्पद बात और कुछ नहीं हो सकती कि हर मामले में गंदगी से सराबोर एक सरकार देश को कूड़े-कर्कट से मुक्त करने का झांसा लोगों को दे रही है। इसी प्रकार, अब कुछ महीनों से इस सरकार ने अभियान छेड़ा हुआ है जिसमें लोगों को स्वेच्छा से सब्सिडी छोड़ने का आह्वान किया जा रहा है और इस तरह सभी को सस्ता और साफ ईंधन उपलब्ध कराने के अपने चुनावी वायदे से पीछे हटने की जमीन तैयार की जा रही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये तमाम घोषणाएं बिहार विधान सभा के चुनावों के समापन के ठीक बाद की गई हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन कदमों का मतदाताओं पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

लोगों को और भी ज्यादा निचोड़ने के लिए उठाये गये उपरोक्त कदमों का जोरदार विरोध करते हुए हम एक बार फिर लोगों से इस सच्चाई को समझने का आग्रह करते हैं कि सही नेतृत्व के तहत एक जोरदार संयुक्त संगठित जनआन्दोलन छेड़ कर ही केन्द्र सरकार के बढ़ते जनविरोधी कदमों पर अंकुश लगाया जा सकता है।

ओडिशा विधान सभा पर विशाल प्रदर्शन

भुवनेश्वर : श्रम कानूनों में मजदूर-विरोधी नये संशोधनों व मजदूर-विरोधी नीतियों को वापस लेने, न्यूनतम वेतन 15000 रुपये मासिक करने, निजीकरण पर रोक लगाने, एसईएम, आशा, आंगनवाड़ी, पचिका कर्मियों को मजदूर का दर्जा देने आदि मांगों पर ऑल इण्डिया यूटीयूसी की ओडिशा राज्य कमेटी के तत्वावधान में 16 नवम्बर को ओडिशा विधान सभा पर विशाल प्रदर्शन किया गया।

राजनैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन

दिल्ली में 31 अक्तूबर व 1 नवम्बर को एसयूसीआई(सी), दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी द्वारा दो दिवसीय राजनैतिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिक्षण शिविर का संचालन पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने किया। कॉमरेड चक्रवर्ती ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और पार्टी संगठन के कुछ पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। यिाक्षण शिविर में छात्र-नौजवानों और महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की।

दिल्ली में आयोजित राजनैतिक शिक्षण शिविर का संचालन करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

शिक्षण शिविर की शुरूआत कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान से हुई और समापन अन्तर्राष्ट्रीय गीत से हुआ।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण ...

(पृष्ठ 7 का शेष)

समाजवाद को लगे अस्थायी धक्कों से सीख लेकर हम आगे बढ़ते जायें

आपको याद कराना चाहता हूँ, मनीषी रोमां रोलां ने एक दिन गहरी चिन्ता के साथ कहा था, ''अगर यह (सोवियत यूनियन) कुचल दिया गया तो न केवल दुनिया का सर्वहारा गुलाम बना दिया जायेगा, बल्कि सामाजिक या व्यक्तिगत, हर प्रकार की आजादी को ही कई स्तर पीछे धकेल दिया जायेगा। ...तब समझ लीजिए कि कुछ सदियों तक मानो वहाँ अंधकार छा जायेगा।'' यही आज मार्मिक सच्चाई है। दुनिया के सभी देशों में, जीवन के सभी क्षेत्रों को गहरा अंधकार लपेट लेता जा रहा है। विश्व साम्राज्यवाद-पूँजीवाद सड़ी-गली बदबूदार लाश की तरह जीवन को हर लिहाज से दूषित करता जा रहा है और इसे असहनीय बनाता जा रहा है। इस तरह चलने दिया गया तो यह संकट और भी भयावह रूप लेगा। एकमात्र आशा की किरण है इस अजेय विचारधारा, मार्क्सवाद-लेनिनवाद- शिवदास घोष चिन्तनधारा की मदद से नई शुरू की गई सफल समाजवादी क्रान्ति। हर देश में इस क्रान्ति को सफल करना होगा। हम अपने देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत करने के द्वारा दूसरे देशों के क्रान्तिकारी आन्दोलन को प्रेरित कर सकते हैं। महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा संस्थापित हमारी पार्टी पर ही इतिहास ने यह काम करने का जिम्मा सौंपा है। एक बार फिर याद करें इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को निभाने के उद्देश्य को लेकर ही कॉमरेड शिवदास घोष ने तमाम प्रतिकूलता के बावजूद कितना कठिन और कठोर संघर्ष चला कर इस पार्टी को बनाया है! पार्टी गठन कालं की तुलना में आज पार्टी को मजबूत करने और विस्तारित करने के लिए परिस्थिति कितनी अनुकूल है। हम हमारे कन्धों पर आयी इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को किस तरह निभा सकते हैं, उसी के बारे में महान शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष के शब्दों में यह दिशा दी गई है, ''भारत आज मुक्ति-यंत्रणा से छटपटा रहा है। ... लोग परिवर्तन चाहते हैं। पुराने समाज की फौजी ताकत पर आश्रित होने के सिवा शासक वर्ग के पास और कुछ नहीं बचा है। वे लोगों की अज्ञानता और राजनैतिक विभ्रान्ति पर भी निर्भर कर रहे हैं—लेकिन यह बहुत अहमियत की बात नहीं है। ... केवल लोगों के संगठित, सचेत राजनैतिक आन्दोलन का अभाव है और जितनी न्यूनतम शक्ति होने से क्रान्ति के लिए जनता में जोश को ...क्रान्ति के लिए परिपक्व इस परिस्थिति को एक संगठित दीर्घस्थायी लड़ाई में उतारा जा सकता है, उतनी शक्ति-सम्पन्न एक सही क्रान्तिकारी पार्टी का अभाव है। ... आने वाले दिन हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस पार्टी को तेजी से अति अल्प समय में ही क्रान्ति में नेतृत्व देने लायक राजनैतिक एवं सांगठनिक पहलुओं से मजबूत कर देना होगा। पहले, सोचने पर भी, हम यह काम नहीं कर पाते। लेकिन अब हमारी जो संख्या है, उससे हमारा हर नेता और कार्यकर्ता अगर सोच कर इसे वास्तविकता में रूप देने की कोशिश करे तो हम यह काम कर सकते हैं। उसके लिए हर नेता और कार्यकर्ता को अपनी पहलकदमी और बुद्धि के अनुसार —चाहे कर पाये या नहीं कर पाये, सफल हो या असफल—कार्यविमुख न होकर काम करते जाना होगा।'' मुझे पक्का यकीन है कि हमारी पार्टी के हर नेता और कार्यकर्ता इस आह्वान को मर्यादा देते हुए अपनी जिम्मेदारी निभायेंगे। इस सभा में जो विशाल संख्यक समर्थक और हमदर्द जनगण उपस्थित हैं वे भी जिम्मेदारी निभाने में भरपूर मदद देंगे। यही होगी कॉमरेड शिवदास घोष के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली।

मैंने सभा की शुरूआत में ही कहा है कि अन्य किसी सामाजिक-राजनैतिक प्रश्न को लेकर आज की सभा में चर्चा नहीं करूँगा। प्रासंगिक मान कर कुछ जटिल विषयों को लेकर चर्चा की है। आशा करता हूँ कि आप सोच कर देखेंगे।

"Print-line
Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन न. : 011-25726631, 9868350503